हिन्दी विभाग

आओ सीखें

फुलो से हम हँसना सीखें ।
भौरों से हम गाना ।।
वृक्षों की ड़ाली से सीखें ।
झुकना और झुकाना ।।
वायु के झोंकों से सीखे ।
कोमल भाव बहाना ।।
दुध तथा पानी से सीखें ।
मिलना और मिलाना ।।
सुरज की किरणों से सीखें।
जगना और जगाना ।।
लता और बेलों से सीखें ।
सबको गले लगाना ।।
पतझड़ के पेड़ो से सीखें ।
दुखः मे धैर्य बंधाना ।।
दीपक की लौ से हम सीखें ।
जलना और जलाना ।।
पृथ्वी से हम सदा ही सीखें ।
सबका बोझ उठाना ।।
नदी की जलधारा से सीखें ।
बढना और बढाना ।।
धुएँ से हम सब ही सीखें ।
ऊँचे चढते जाना ।।
मछली से हम सब ही सीखें ।
स्वदेश हेतु मर जाना
फुलों से हम हँसना सीखें ।
भौरों से हम गाना ।।

सुभाष तिवारी - मँसेनंजर (अली गंज ब्रांच)

मातृभुमि

मत काटो उस ड़ाली को, जिस ड़ाली पर बैठे हो ।
शान रखो उस देश की, जिस देश में जनमें हो ।
यही तुम्हारी मातृभूमी है
यही तुम्हारी माता है
यही तुम्हारी धन-दौलत है
यही भाग्य विधाता है
देश की धुलि ही चंदन है
इस धुलि में तुम ही पलत, इस धुलि के उपजे अन्नसे ।
तुम ही अपने भुख मिटाते
जाओ वीरो, जल्दी जाओ
सरहद की रखवाली करो
देर अगर हो गई तो
रह जाओगे हाथ मलते
मत काटो उस ड़ाली को, जिस ड़ाली पर बैठे हो ।
शान रखो उस देश की, जिस देश में जनमें हो ।

कमलेश पांड़े - ऑपरेशन ऑक्जिकिटिव - रांची (झारखंड)

माँ

जब मै छोटा था माँ की शय्या गीली रखता था,
अब बड़ा हुआ तो माँ की आँखे गीली रखता हूँ .....
.....रे पुत्र तुझे माँ को गीलेपन में रखने की आदत सी हो गई,
माँ पहले आँसु आते थे तो तु याद आती थी,
आज तु याद आती है तो आँसु आते है
बचपन के ८-१० साल तुझे अंगुली पकड़कर, जो माँ-बाप स्कुल ले जाते थें
उन माँ -बाप के ८-१० साल बुढापे मे सहारा बनकर मंदिर ले जाना....
शायद थोड़ा सा कर्ज या थोड़ा सा फर्ज पुरा होगा....
माँ -बाप के आँखों मे आँसु दो बार आते है
लड़की घर छोड़े तब, लड़का मुँह मोड़े तब.....
जिस माँ-बाप ने मुन्ने को हँसना - बोलना सिखाया,
वह बड़ा होकर माँ-बाप को मौन रहना सिखाता है
....हाय ये कैसी दास्ता
जिन बेटो के जन्म पर माँ-बाप ने खुशी से पेढ़े बाँटे.....
वही बेटा बड़ा होकर माँ-बाप को बाँटे..... ये कैसी करुणता ?
आज तु जो कुछ भी है माँ की बदौलत है
क्यों की तुझे जन्म दिया है
गर्भपात कराके राक्षसी तो नही बनी, इतना तो सोच.....
जीवन के अंधरे पथ पर सुरज बनकर रोशनी करने वाले .....
माँ-बाप की जिन्दगी में अन्धकार मत फैलाना.....
पत्नी पसंद से मिलती है, माँ पुण्य से ही मिलती है
पसंद से मिलने वाली के लिए पुण्य से मिलने वाली को मत ठुकराना.....
माँ तुने तीर्थकारो को जना है, संसार तेरे ही दम से बना है.....
तु मेरी पुजा है..... मन्नत है मेरी,
तेरे कदमो में जन्नत है मेरी.....

राजेंद्र सिंह चुफाल - जनकपुरी ब्रांच (नई दिल्ली)

हमारा परिवार

जानते थे हम यह सबक,
रखे जायेंगे जब टोकरी में आम
कोई नीचे होगा, कोई ऊपर
सभी का अपना-अपना भाग्य
इसलिए ईर्ष्या से दूर थे हम
और किसी दिन उत्सव पर
मिलते थे हम एक साथ
बैठते थे एक जगह खाते और गप्पें लड़ाते
लगता था एक ही खून, एक ही आत्मा
ड़ोल रही है चारों ओर
और अगर कभी किसी ने ठुकराया भी दूसरे को,
फिर प्यार किया पहले की तरह
कभी-कभी अलग भी हो जाते थे हम
अलग-अलग द्वार की तरह
फिर वापस एक जैसे,
जैसे एक ही घर के
अलग-अलग द्वार !

राजेश मोहन प्रसाद - सिनीअर ऑक्जिकिटिव टाटा ब्रांच